P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-4* ISSUE-5*January-2017
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

भूमण्डलीकरण : भारतीय समाज

सारांश

भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया से सामाजिक जीवन बदला है। और भारतीय प्रणाली में भारी प्रभाव के साथ–साथ आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक संरचनाओं में भी परिवर्तन तीव्र गति से हुआ है। पहले ये धीरे–धीरे हो रहा था, आज समाज में सूचना प्रोधोगिक ने साथ संचार के नये तरीकों ने दुनिया को बहुत छोटा बना दिया है। भूमण्डलीकरण से कारण उत्पादन श्रृंखला में वृद्वि हुई हैं। बहुराष्ट्रीय कम्पनीयां पूरी दुनिया में नवनिर्माण कीया है। यह सकारात्मक पहलू है। भारत में अन्तराष्ट्रीय व्यापार को विस्तार की नीति अपनानी होगी तभी भारत आर्थिक, राजनैतिक एवं सामाजिक रूप से सभी श्रेत्रों में मजबूत होगा।

मुख्य शब्द : भूमण्डलीकरण,बहुराष्ट्रीय कम्पनीयां, प्रतिष्पद्धा, प्रौधोगिकी,वैश्यीकरण, वैश्विकग्राम, औधोगिक क्रान्ति, अन्तःनिर्भरता, अन्योन्याश्रिता, उत्तर औधोगिक, सशक्तिकरण

लाला राम मीणा
व्याख्याता,
समाजशास्त्र विभाग,
गवर्नमेंट आर्ट्स कॉलेज,
दौसा, राजस्थान

प्रस्तावना

भूमण्डलीकरण का भारतीय समाज पर प्रभाव

भूमण्डलीकरण प्रतिस्पर्द्धा है। एकीकृत और स्तर पर लोगों के सांस्कृतिक मूल्यों को प्रभावित करने में सहायक है। भूमण्डलीकरण देशों के सामाजिक सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनैतिक और धार्मिक जीवन पर एक बडा प्रभाव है। भूमण्डलीकरण के बारे में जानकारी विचारो प्रौधोगिकी, माल, सेवाओं, पूँजी वित्तय लोग सेवाओं और सूचना की सीमा प्रवाह के माध्यम से एकीकृत कर रहे है। इन विभिन्न कारको के प्रभावों के परिर्वतन के कारण आज दुनिया को वैश्विक ग्राम की संज्ञा दी गई है। वास्तव में भूमण्डलीकरण या वैश्वीकरण सामाजिक–सांस्कृतिक आर्थिक और राजनैतिक क्षेत्रों में चल रही परिवर्तन की एक प्रक्रिया है। जिसमें संचार की व्यवस्था में औधोगिक क्रान्ति के द्वारा उत्पन्न शक्तियों ने सम्पूर्ण विश्व की एक भविष्य वादी संस्कृति में डालने का एवं सम्पूर्ण विश्व को भविष्यवादी ग्राम बना देना का अभिमान है।

भूमण्डलीकरण की अवधारणाए

सरल भाषा में भूमण्डलीकरण का अर्थ है ''संसार के विभिन्न समाजों की अन्योन्याश्रिता एवं पारस्परिक अन्तःनिर्भरता का विकास'' भूमण्डलीकरण या वैश्यीकृत की अनेक समाजशास्त्रीयों या मानवशास्त्रीयों और अर्थशास्त्रीयों जैसेः– योगेन्द्र सिह, डिस्सांक, गिडिंग्स, इरिक्सेन, रोबर्टसन, बलदेव राजनायर आदि ने दी है। समाज, वैज्ञानिकों की परिभाषाऐ विषय विशेषो के रूप में देखा जा सकता है।

योगेन्द्र सिंह

वैश्वीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसने वित्त एवं बैंकिंग, व्यापार और राजकोषिय सम्बन्ध है जीवन के तरीके और फुरसत के समय की गतिविधियों को क्रान्तिकारी रूप में परिवर्तित कर दिया है।

आपने वैश्वीकरण के अर्थ को समाजशास्त्रीय दृष्टीकोण से स्पष्ट करने के लिए डिस्सान्क के कथन को उद्वरिता किया है जो इस प्रकार है सामाजिक संरचात्मक शब्दावली के अनुसार वैश्वीकरण कृषिक औधोगिक, उत्तर औधोगिक, उत्तर औधोगिक और अन्त सूचना समाज में परिर्वतन की ऐतिहासिक प्रक्रिया है'' एन्योनी गिडिंग्स ने वैश्वीकरण की परिभाषा देते हुए लिखा है आज सा. राजनैतिक और आर्थिक संबंध इस प्रकार के है जो राष्ट्रीय सीमाओं को वार करके देशों के मध्य की स्थितियों एवं भाग्य को निश्चित करते है। दुनिया की इस बढ़ती हुई अन्तनिर्भण को ही वैश्वीकरण कहते है।

थामस हाइलैण्ड इतिक्सेन की मान्यता है कि संसार में दो प्रक्रियाऐं चल रही है। विश्वव्यापी प्रक्रियाऐं और स्थानीय प्रक्रियाऐं आपने इन दोनो प्रक्रियाओं के अन्तसंबंधो को ही वैश्वीकरण कहा है।

उपयुक्त वर्णित परिभाषाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि वैश्वीकरण एक विशिष्ट एवं वृहद प्रक्रिया है। जो विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों, देशों राष्ट्रो और राज्यों आदि समाजों के मूल या स्थानिय निवासियों को एक– दूसरे को सामाजिक, सांस्कृतिक आर्थिक और राजनैतिक संबंधो से जोडता है, और उनमें विश्ववाद पैदा होतो है। वैश्वीकरण यह व्यापक करता है कि किस प्रकार से संसार के सभी आदिम ग्रामीण, नगरीय और महानगरीय समाज अपनी वस्तुओं, विचारो एवं उपलब्धियों का आदान प्रदान करके विश्व स्तर पर एक समग्रता का निर्माण कर रहे है। वैश्वीकरण संसार के विभिन्न समाजकों की सामाजिक व्यवस्थाओं को दुनिया की एक वृहद सामाजिक व्यवस्था के निर्माण की ओर परिवर्तन की जटिल प्रक्रिया है।

वैश्वीकरण एक व्यापक सम्राट्य, सार्वभौमिक वैज्ञानिक चेतन और अचेतन, आर्थिक, सांस्कृतिक व सामाजिक आन्दोलन है।

वैश्वीकरण की प्रक्रिया के साथ यहॉ टी.वी के लिए एक का उपयोग शहरी आबादी 2009 का 90प्रशित शहरी आबादी में इन्टरनेट की सुविधा हर जगह बड़ी है। भारत के शहरी क्षेत्रों में वैश्विक खाद्य, श्रृखंला रेस्टोरेन्टस की वृद्धि हुई है। अत्यधिक मल्टीप्लेक्स फिल्म हॉल बडे शॉपिंग मॉल और उच्च वृद्धि आवासीय हर शहरों में देखा जाता है। भारत में मनोरंजन के क्षेत्र में एक वैश्विक बाजार है। आर्थिक उदारीकरण के बाद बॉलीवुड में अपने क्षेत्र का विस्तार और वैश्विक स्तर में प्रमुख उपस्थिति देखी गई है उद्योग को और अधिक वैश्विक और आधुनिक बनने के लिए नये तरीको का पता लगाने के लिए शुरू किया। भारत आधुनिक पश्चिमी देशों के साथ मनाया जाता है। इसलिए पश्चिमी दर्शन बॉलीवुड फिल्मों में शामिल किया जाने लगा इन नए सांस्कृतिक संदेशो भारतीय आबादी तक पहुॅचने के लिए शुरू किया भारतीय जाने वालों को उनकी पारम्परिक भारतीय सांस्कृतिक विचारधारा को फिर से मूल्यांन करने के लिए धकेल दिया गया। बॉलीवुड फिल्मों में भी वितरति और अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर स्वीकार किया जाते है। बडी अन्तरराष्ट्रीय कम्पनियों व डिज्नीए 20वीं सेंचुरी फाक्सए और कोलंबिया पिच्चर्स इस क्षेत्र पर निवेश कर रहे है। अरमानीए गुच्चीए नाईक और ओयेगा के रूप में प्रसिद्व अंन्तराष्ट्रीय ब्राण्डों भी भारतीयों के फैशन स्टेटमेंट के बदलने के साथ भारतीय बाजार में निवेश कर रहे है।

अध्ययन के उद्देश्य

वैश्वीकरण परियोजना अंतरराष्ट्रीय अनुसंधान और वैश्वीकरण के सांस्कृतिक आयामों पर विद्वानों के आदान–प्रदान को आगे बढ़ाने के व्यापक उद्देश्य के साथ शिकागो विश्वविद्यालय में स्थापित किया गया था। इसकी सबसे सामान्य में, वैश्वीकरण राष्ट्रीय और क्षेत्रीय सिस्टम के पार वस्तुओं, छवियों और व्यक्तियों की तेजी से तेजी से आंदोलनों शामिल है। परियोजना को एक साथ जीम सामाजिक और सांस्कृतिक विज्ञान में प्रशिक्षित विद्वानों ड्राइंग द्वारा इन आंदोलनों के तर्क में जांच को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से।

यह मानते हुए कि वैश्विक प्रक्रियाओं नया शक्तिशाली संबंधों को पैदा कर रहे हैं – बाजार, कानून, और मीडिया के माध्यम से – और एक ही समय में सांस्कृतिक स्वायत्तता और जातीय पहचान के लिए मजबूत कॉल प्रेरणादायक, परियोजना इस विरोधाभास को उजागर करना और कक्षा में यह बहस के लिए नए तरीके विकसित करने की मांग के रूप में अच्छी तरह से अधिक सार्वजनिक सेटिंग में के रूप में। जबकि परियोजना एक अनुदान लेने या डिग्री देने संस्था नहीं था, यह was actively सेमिनार, बवससवुनपं, और दोनों शिकागो विश्वविद्यालय में और दुनिया भर में हमारे भागीदार संस्थानों के साथ अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों के माध्यम से बातचीत के प्रायोजन में शामिल किया गया। अरमानी, गुच्ची, नाईक और ओयेगा के रूप में प्रसिद्ध अंन्तराष्ट्रीय ब्राण्डों भी भारतीयों के फैशन स्टेटमेंट के बदलने के साथ भारतीय बाजार में निवेश कर रहे है

शिक्षा पर वैश्वीकरण का प्रभाव

इस तरह के विशाल साक्षरता दर उॅची हो जाते है और विदेशी विश्वविद्यालयों विभिन्न भारतीय विश्व विद्यालयों के साथ सहयोग कर रहे है, के रूप में शिक्षा के क्षेत्र में मनाया प्रभाव भूमंडलीकरण की वजह से है। भारतीय शिक्षा प्रणाली सूचना प्रौधोगिकी के माध्यम से वैश्वीकरण की चुनौतिया का सामना कर रहा है और यह विकास शिक्षा के क्षेत्र में नए मापदण्ड पारियो विकसित करने के लिए अवसर प्रदान करता है। औपचारिक गैर औपचारिक और अनौपचारिक शिक्षा के बीच भेद गायब जब जानकारी समाज के लिए औधोगिक समाज से कदम जगह लेता होगा वैश्वीकरण इस तरह के ई–लर्निंग लचीले शिक्षा दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम और विभिन्न देशों में प्रशिक्षण के रूप में लए उपकरणों और तकनीकि को बढ़ावा देता है।

यह वर्तमान भारतीय समाज है कि वैश्वीकरण के माध्यम से महिलाओं को नौकरी के विकल्प के लिए कुछ खास अवसरों का कायदा हुहा है और मानव अधिकारों के एक भाग के रूप में महिलाओं के अधिकारों को पहचान करने में मनाया जाता है। उनके सशक्तिकरण काफि अवसरों और वैश्वीकरण एकजुटता और समन्वय के माध्यम से रोजगार की स्थिति में सुधार की संभावनाओं को देखते हुए किया गया है। यह पाया गया है कम्प्यूटर और अन्य प्रौधोगिकी के विकास को सक्षम बेहतर फ्लेक्स समय और क्षमता के साथ महिलाओं को घर में और कार्पोरेट स्तर पर उनकी भूमिका और स्थिति के लिए बातचीत करने के लिए है।

निष्कर्ष

इस तरह के ग्रामीण और शहरी भारतीय बेरोजगारी झुग्गी राजधानियों के विकास और आंतकवादी गतिविधियों के खतरे के बीच इस प्रक्रिया को बनाया असमानता के रूप में वैश्वीकरण विदेशी कंपनियों और घरेलू कंपनियों के बीच भारतीय बाजार में क्षतिस्पर्द्धा बढ़ गई। विदेशी माल भारतीय माल की तुलना में बेहतर होने के साथ–साथ उपयोगिता विदेशी माल खरीदने में प्राथमिकता दी। यह भारतीय उघोग उत्पाद के लाभ की मात्रा कम है, यह दवा निर्माण, रसायन और इस्पात

उद्योग में मुख्य रूप से हुआ यह भारतीय उद्योग पर वैश्वीकरण का नकारात्मक प्रभाव है। यहॉ अमीर और गरीब है, कि कुछ अपराधिक गतिविधियों के लिए नेतृत्व के बीच एक वृद्धि का अन्तर है। भारत में वैश्वीकरण का एक अन्य प्रमुख नकारात्मक प्रभाव यह है कि भारत में युवाओ को अपनी पढ़ाई छोडने बहुत जल्दी और नीरस काम के साथ आदि होने के बाद उनके सामाजिक जीवन को कम करने के लिए पैसे कमाने के लिए कॉल सेन्टर में शामिल होने के लिए है। हर दैनिक उपयोगी वस्तुओं की वृद्धि हुई है। इस सांस्कृतिक पहलू पर प्रतिकूल प्रभाव पडता हैं विवाह की संस्था तेज दर से टूट जाता है। और अधिक लोग तलाक अदालतों के करीब पहुँचने के बजाय वैवाहिक जीवन को बनाए रखते रहे है।

वैश्वीकरण भारत के धार्मिक स्थिति पर काफी प्रभाव पडता हैं। वैश्वीकरण की आबादी है, जो नास्तिक है। बढ़ाने के बारे में लाया गया है। पूजा के स्थानों पर जाकर लोगों को समय के साथ कम रहे है। वैश्वीकरण देश में राष्ट्रवाद और देशभक्ति कम हो गया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *इण्डियन लेबर जनरल : पब्लिशड मन्थली बाई लेबर ब्यूरो सिमला पो. 25, नं. 8*
2. *इकॉनोमिक एण्ड पालिटिकल वीकली 1968, बी–1*
3. *एनसाईक्लोपीडिया ऑफ सोसियल साइसेम।*
4. *सेन्सस ऑफ इण्डिया, 1981 सीरोज–1 इण्डिया।*
5. *सोसियल चेंज – जनरल ऑफ दी काउसिल हाफ फॉर सोसियल डवलपमेन्ट ''स्टडीज ऑफ वूमैन इन इण्डिया बी– 25 नं. 2 जून 1985*
6. *इण्डियन जनरल ऑफ सोसियल वर्क*
7. *प्रोब्लेम्स ऑफ वूमेन्स एम्पलोयमेन्ट एम.आर.मेयर।*
8. *नरेन्द्र सिंह और सीमा देवी, कुरूक्षेत्र सितम्बर,2004 पृष्ठ 21*
9. *इबोश, इतिहास बोध जून 2003 पृष्ठ 34*
10. *श्री लता स्वामीनाथन, आधी जमीन सितम्बर 2001 पृष्ठ–12*
11. *फिलहाम मार्च 2001 श्री कृष्ण नगर पटेल पृष्ठ–2*
12. *रेड स्टार दिसम्बर 2002, गोविन्दपुरी कालाकाजी नई दिल्ली पृष्ठ–4*
13. *ईबोस, इतिहास बोध जून 2003 पृष्ठ–38*
14. *सच्चिदानन्द सिन्हा, भूमण्डलीकरण की चिनौतियाँ भूमिका से ।*
15. *एस.उमा देवी, इकोनामिक एण्ड पोलिटिकल वीकली पृष्ठ – 4421*
16. *सच्चिदानन्द सिन्हा, भूमण्डलीकरण की चुनौतियाँ भूमिका से।*
17. *पर्यवेक्षक, समकालीन जनमत सितम्बर, 2002 पृष्ठ– 22*
18. *एस.उमा देवी इकोनोमिक एण्ड पोलिटिकल वीकली, पृष्ठ–1109*
19. *एंथनी गिडेन्स, भारत का भूमण्डलीकरण में उद्धत पृष्ठ सं. – 39*
20. *अभय कुमार दुबे, भारत का भूमण्डलीकरण,पृष्ठ सं. –35*
21. *गैट का गडबड झाला पब्लिक इंटरेस्ट रिसर्च ग्रुप दिल्ली, पृष्ठ–6, पृष्ठ–20*
22. *बी.एन.सिंह दि अण्डर लाइन सितम्बर, 1993, पृष्ठ सं. – 12*
23. *सा. अभय कुमार दुबे भारत का भूमण्डलीकरण पृष्ठ–52।*
24. *फिलहाल, मार्च 2001 श्री कृष्ण नगर पटना।*
25. *सा. विश्वनाथ मिश्र, दायित्व बोध पृष्ठ सं. – 4152।*